हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-५ अङ्क-९(ब) अप्रैल, २००९

सम्पादकीय

ऐन्ज़ैक-दिवस

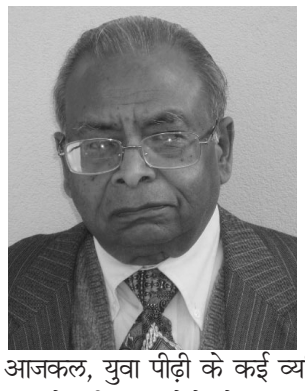

ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड में हर वर्ष २५ अप्रैल को 'ऐन्ज़ैक-दिवस' मनाया जाता है। ऐन्ज़ैक (ANZAC) शब्द 'ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड आर्मी कोर' का संक्षिप्त रूप है। प्रथम विश्वयुद्ध में, २५ अप्रैल से ले कर ९ जनवरी, १९१६ तक तुर्की में गैलीपोली नामक स्थान पर ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड और तुर्की की सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ, जिस में दोनों ओर की सेनाओं को भीषण क्षति उठानी पड़ी। हज़ारों सैनिक शहीद हो गये। तब से ले कर आज तक, २५ अप्रैल, ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड में शहीद-दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज भी गैलीपोली में ऊषाकाल में सैनिकों की स्मृति में दुदुम्भी बजायी जाती है और सैनिक परेड होती है, मृत सैनिकों की याद में भाषण दिये जाते हैं। परन्तु अब यह दिन केवल 'गैलीपोली' तक नहीं सीमित है। आजकल यह दिन ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड दोनों देशों के हर शहर और गाँव में मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त अब यह दिन प्रथम विश्वयुद्ध तक न सीमित रह कर, द्वितीय विश्वयुद्ध तथा उसके बाद हुए सभी युद्धों, उदाहरण के लिये वियतनाम, ईराक़ तथा अफ़ग़ानिस्तान, सभी युद्धों में शहीद हुए सैनिकों की याद में मनाया जाता है। पहले परेड में केवल सैनिक भाग लेते थे पर आजकल, युवा पीढ़ी के कई व्यक्ति तथा बच्चे भी इन परेडों में भाग लेने लगे हैं। अपने देश की स्वतंत्रता और जीवन-शैली बनाये रखने के लिये जिन सैनिकों ने अपनी जान क़ुर्बान कर दी, उन्हें हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। काश कि लोग, बातचीत द्वारा समस्याएँ हल कर पाते तो कितने ही लोगों की जान बच जाती पर दुर्भाग्यवश, कभी-कभी युद्ध लड़ना आवश्यक हो जाता है।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में कुछ रोचक कविताएँ हैं, मार्च में मेल्बर्न में हुए एक हास्य कवि-सम्मेलन की काव्यात्मक रिपोर्ट है। इसके अतिरिक्त कहानी 'समय शेष' का तीसरा भाग है। साथ में 'हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

काव्य-कुंज

दो लघु गीत

-प्रो० भागवत प्रसाद मिश्र "नियाज़"
अहमदाबाद, भारतवष

१. **खोल दो तुम वेदना के द्वार**
देख लो इस पार से उस पार
क्या यहाँ कभी आया मधुमास?
क्या लुटाया है कभी उल्लास?
भूल से भी क्या कभी सुख का
लग रहा है यहाँ तुम्हें आवास?
दुख-निराशा-व्यथा
इसका लग रहा अम्बार
खोल दो तुम वेदना के द्वार

२. **फ़ासला**
हमारे और तुम्हारे बीच
बड़ा फ़ासला है।
इस फ़ासले को
दूर करने की कोशिश
बेकार है।
कितनी बार
हम जिंदगी में मिले
और यह सोचा कि
अब साथ-साथ रहेंगे,
अलग न होंगे।
पर ऐसा न हुआ
इसलिये मेरी बात मानो
यह फ़ासला यूँ ही रहने दो।

मित्र!

-हरिहर झा, मेल्बर्न

मित्र!
हम तो चले थे
उस नकली और
मशीनी टाइप ज़िंदगी से दूर,
बाइसिकल उठाये सिर पर,
सारी औपचारिकताओं को
छोड़ कर
दिल की बात करने
पर ट्यूब टायर से
फँसे काँटे
दुख अपना कैसे बाँटे

मित्र!
हम तो चले थे
अंतर्मन की लिप्सा को
सुरों में बाँधते हुए
शर्म, लोकाचार की दीवार को लाँघते हुए
फूहड़ फ़िल्मी गीतों से गला फाड़ते हुए
बेसुरे राग से
अब सुनसान
इस नदी किनारे बैठ कर
तो हँस पड़ेगी
हमारी ही छाया।

मित्र!
बहुत हो गयी
मीठी कोयल की तान
खूब कर लिया
खुले आसमान का बखान
प्रकृति में एकरूप होने का दावा
मानसिक शांति का बहलावा
कच्ची और काँटेदार सड़कों पर
धूल फाँकते हुए
अब पैदल ही चलो
भीष्म बनो, काँटों से बिंधे
साइकिल रगड़ कर
थोड़ा गुस्से से भड़क कर
पर थोड़ा
मन ही मन बिगड़ते हुए
अब वापस चलो मित्र!

२०१ सी०डी० और सी०पी०यू०

- सुभाष शर्मा, मेल्बर्न

मैं हूँ सीडी सीधी सादी
तू तो सीपीयू बुद्धिमान
तू गुणा भाग करता रहता
तुझको है मेरा कहाँ ध्यान

मैं साफ़्ट वेयर तू हार्ड वेयर
तुझको मेरी है कहाँ केयर
बस राम भरोसे ही जब-तब
करता मुझसे मेमोरी शेयर
बस राम भरोसे ही एक दूजे से
करते हम मेमोरी शेयर

मैं दुबली पतली छुई-मुई
तू सचमुच में ही पहलवान

ज़ीरो वन ज़ीरो वन गिनता
गीगा मेगा बातें करता
मन ही मन कुछ करता रहता
अपनी दुनिया में खुश रहता
पावर बाइनरी से तू लेकर
हर वक़्त अकड़ता रहता है
वरना डिब्बे में बन्द
अंधेरे में ही सड़ता रहता है

मैं सुन्दर डिब्बी में रहती
मेरा करते हैं सभी ध्यान

तू मेरे दिल का भेद खोल
मॉनीटर पर रख देता है
पर हेक्सा डेसिमल कोड सभी
अपने मन में रख लेता है
जब अक़्ल नहीं चलती तेरी
औरों के सिर मढ़ देता है
और इनवैलिड डाटा कह कर
तू धीरे से बच लेता है

मै शीशे जैसी सच्ची हूँ
तू दस नम्बर का
बेईमान काला कौआ

कोई कोई सीडी ड्राइवर
तुम जैसा भला नहीं होता
बाहों में ऐसे भर लेता
और मिलन नहीं होने देता
तू कुछ भी क्यों न कर पाता
पर बनता है कितना महान
तू मुझे छुड़ा ले तब जानूँ
बनता है तू सबका प्रधान

तू मुझे छुड़ा ले बाहों से
गर सच में है तो पहलवान

कोई कोई सीडी ड्राइवर
बाहों में मुझे जकड़ लेता
मैं कितना भी चाहूँ
मेरा तब तुझ से मिलन नहीं होता
बनता है अक़्लमंद लेकिन
दुनियादारी में तू कोता
तू मुझे छुड़ा ले तब जानूँ
बनता तो है सबका प्रधान

तू काले कौए के जैसा
मै सुन्दर शीशे की जैसी
मै दिखती हूँ उड़न तश्तरी
तू दिखता है डिब्बा देसी

होली का हंगामा

(७ मार्च, २००९ को, होली के उत्सव पर मेल्बर्न में एक हास्य कवि सम्मेलन आयोजित किया गया, जिस में मेल्बर्न तथा सिडनी के कुछ कवियों ने भाग लिया। इस कवि-सम्मेलन के आयोजक, श्री हरिहर झा, डा० सुभाष शर्मा तथा डा० नलिन शारदा धन्यवाद के पात्र हैं। प्रस्तुत है, श्री हरिहर झा के शब्दों में इस कवि सम्मेलन की एक काव्यात्मक रिपोर्ट - सम्पादक)

मेलबर्न शहर के विक्टोरिया राज्य में सूखा, आर्थिक मंदी के असर और वन में लगी आग के समाचार पढ़ते-पढ़ते जिनकी आँखें जलने लगी हैं, मन में कुढ़न के ढेर इक्ट्ठे हो गये हैं या जो हँसी की एक किरण देखने के लिए भी दर-दर मारे मारे फिर रहे हैं उन सज्जनों से हमारी प्रार्थना है (गुलेरी जी की आत्मा से क्षमा-याचना सहित) कि वे ७ मार्च को क्यू-लाईब्रेरी में हो रहे "होली का हंगामा" कार्यक्रम में पधारें जहाँ हँसी के कहकहों का नाम ही मदिरा रख कर गहरे नशे में डूबने का मज़ा लूटा जा रहा है (धन्यवाद राजेंद्र जी) और साथ ही मृदुलाजी के शब्दों में पति-पत्नी की नोक-झोंक का आनन्द उठायें एवं मेरे "अमृत विष के भेद मिट गये, मगन भये मस्ती में" वाले सूफ़ियाने अंदाज का आनन्द उठायें। रेखाजी यहाँ चेतावनी दे रही हैं कि मस्ती में डूब कर कहीं होली और दीवाली का फ़र्क भूल कर पटाखे छोड़ने न लग जाना "होली है दीवाली मत समझना। हम तुम्हारे घर आयें तो मवाली न समझना। या फिर ऐसी हालत न हो जाय कि "दिखती नहीं पत्नी शापिंग मॉल में, ढूँढ़ रहे श्रीमान जी" क्योंकि यहाँ तो पता नहीं क्या हो जाय! "जब आये परदेस में, तो बदले हैं सारे ढंग"।

अब मृदुलाजी की हालत देखिए वे किसी पर "चिप्स-चोर"होने का इल्ज़ाम लगा रहीं हैं। यहाँ आने के पहले कोई महाशय शायद इनके चिप्स चुरा कर बेशर्मी से इनके सामने ही खा रहे थे। शेयर करना तक सीखे नहीं। मांगने पर भी एक चिप की भी आधी करके पकड़ा दी इतने कंजूस! इल्ज़ाम लगाते लगाते जब अपनी झोली खोली तो मारे शर्म के लाल हो उठीं। उनके चिप्स उनके पास है; वे महाशय तो खुद के

-हरिहर झा, मेल्बर्न

अपने चिप्स ही खा रहे थे !

डा० डेविड यहाँ जापानी उमरावजान (याने मेड इन जापान) के साथ रोमांस करते दिखाई दे रहे हैं तो हम ने भी सोचा कि पत्नी मायके में रहे यही ठीक है; यहाँ आकर रंग में भंग न करे। अत: लिख भेजा - वहीं रहना अपनी भाभी के साथ - ननद बनी तो राज तुम्हारा, अपने घर में क्या डर। हुक्म चलाती रहना वह तो तेरे बाप का ही घर।" बाद में पता चला कि डेविड जी के मिज़ाज तो इतने रंगीन है कि दाँत के दर्द को भी वे कैसे संबोधित करते हैं - "दर्दे-मोहब्बत बड़ा पेनफुल, कभी पुश तो कभी पुल। ... ज़रूरी नहीं हैंडसम हो कोई, मगर जिससे नज़र मिल जाय वही ब्यूटीफुल" तब तो मुख्य अतिथि श्री अनिल गुप्ता, जो मेल्बर्न में भारत के वाणिज्यदूतावास में सांस्कृतिक सचिव हैं, भी कविता के मूड में आकर कुमार विश्वास की पंक्तियां दोहराने लगे - कोई दीवाना कहता है; कोई पागल समझता है।

सुभाष जी अपने प्रभु को मेलबर्न बुलाते हैं - "आओ प्रभु आओ तुम मेलबर्न आओ...मेलबर्न में होली खेल जाओ" और अपने प्रभु को चेतावनी भी देते हैं कि मक्खन तो खूब मिलेगा; चोरी करो तो आपकी मर्ज़ी, पर इस तरह अपना कोलेस्ट्राल न बढ़ा लेना; साथ ही चीर हरण की तो बात भी मत सोचना; यहाँ तो गोपियाँ पहले ही कम वस्त्र पहनती हैं। श्रोताओं ने मध्यान्तर में समोसे खाने से ज्यादा आनंद लिया उनकी कविता "समोसा और जलेबी" में।

राजेन्द्रजी बड़ी गम्भीर मुद्रा में सोच रहे हैं - कविता क्या है? वे कहते हैं "एक समय, एक ज्ञान...काव्य इत:।" साथ ही वे कवि के रूप में अपना सामाजिक दायित्व भी निभा रहे हैं। वे कथित नीची जाति के लोगों पर हो रहे दुर्व्यवहार पर आक्रोश व्यक्त कर रहे हैं - "मुझे ओये मत कहना, समाज का अंग हूँ अंग ही रहने देना ... मैं ही तो कुआँ खोदता हूँ...मत भरने दो पानी मुझे...प्यास बुझाने आऊँ तो मुझे ओये मत कहना"। उन्हें भारत की चिन्ता हो रही है कि "खादी वाले अपने ही देश को खा गये"। दूसरी तरफ सुभाष जी आस्ट्रेलिया के भूतपूर्व वित्तमन्त्री पीटर कोस्टेलो और वर्तमान प्रधान-मंत्री केविन रड की चुटकी लेते हैं, "जेब काट के म्हारी, करी रड ने गड़बड़; पीटर पीटे छाती, हॉकी करे हाय हाय।"

डा· नलिन जी बताने लगे किस तरह मुम्बई के भाई लोगों ने साधु-वेश में भी सब की वाट लगाई (बॉलीवुड को धन्यवाद कि यह मुम्बइया हिन्दी समझने में किसी को देर न लगी) तो मुझे अपनी वाट लगने का किस्सा याद आया जब बचपन की सहपाठिन के ई-मेल बीबी ने बाँच लिये - फिर तो क्या था - पूछ परछ में धम-धम गिरते बर्तन के खूब शोर हुये। हम बहुत ही बोर हुये।

मृदुला जी "लो फिर आ गई होली से याद दिला रही हैं कि किस तरह मेलबर्न के शिव-विष्णु मंदिर में पंजाबी, मराठी, गुजराती, उत्तरी और दक्षिणी भारतीय एकत्रित हो कर नाचते-गाते धूम-धड़ाके से होली मनाते हैं; वरना तो ऐसे भी लोग होते हैं जिनका बस सिद्धान्त है - मित्रों से झगड़ता चल, बीवी पे बिगड़ता चल, बोर हुई इस दुनिया में मज़ा उन्हें भी देता चल।

कहानी

समय शेष (भाग ३)*

(इस कहानी के पिछले दो भागों में आपने पढ़ा कि दूध लेने के स्थान पर किस प्रकार दशरथ बाबू की एक वृद्ध महिला से भेंट हुई और उनकी टूटी चप्पल देख कर, दशरथ बाबू ने उन्हें अपनी चप्पल दे दी। वृद्धा सुमित्रा की बहू ने उन्हें किसी पुरुष की चप्पल पहने देख कर बहुत बुरा-भला कहा। दूसरे दिन, सुमित्रा ने दशरथ बाबू की चप्पलें लौटा दीं और नंगे पैर दूध लेने आने लगी। धीरे-धीरे, दोनों ने एक दूसरे का नाम जान लिया और दूध की वैन की प्रतीक्षा करते समय आपस में बातें करने लगे। बातों का मुख्य विषय होता था राजनीति... कि कौन कौन नेता चोर है और अपराधों में डूबा हुआ है। केन्द्र से ले कर राज्य तक में कैसे-कैसे आर्थिक कुकांड हो रहे हैं। अदालत की सन्नद्धता के बावजूद केंद्रीय जाँच ब्यूरो का रवैया विश्वसनीय नहीं। लीजिये, अब पढ़िये कि आगे की कहानी -सम्पादक।)

- युगल

दशरथ बाबू और सुमित्रा के बीच की बातें होतीं- सब्जी की महँगाई, लोडशेडिंग की दिक्कतें, गैस की समस्या या फिर चीज़ों के दाम पिछले साल कितने थे और एक साल में किस प्रकार दूने हो गए हैं। कभी बूथ से दोनों साथ चलते और आगे जा कर उनके रास्ते अलग हो जाते। एक दिन साथ चलते-चलते सुमित्रा ने पूछा- "आप कब रिटायर हुए?"

"उन्नीस सौ पच्चासी में ।"

सुमित्रा ने मन ही मन में हिसाब लगाया- "तब तो आप सत्तर के पास पहुंच रहे हैं। मैं आपसे दस साल छोटी हूं।"

दशरथ बाबू ने सुमित्रा को देखा, पेशानी पर झुर्रियों की मात्र दो रेखाएं थीं। माँग सूनी। चेहरा पहले इससे भी ज्यादा गोरा रहा होगा।

सुमित्रा बोली- "लेकिन आप सत्तर के लगते नहीं हैं।"

"और तुम, तुम क्या साठ की लगती हो?"

सहसा दशरथ बाबू को लगा, अरे! उन्होंने यह क्या कह दिया! उनका सर झुक गया। पहली बार सुमित्रा के लिए उनके मुँह से 'तुम' निकला था।

अगले दिन वह वैन के इंतज़ार में बैठे थे। बगल में बैठा आदमी डा. नरेंद्र के लड़के के अपहरण के प्रति चिंता व्यक्त कर रहा था। उसका ख़्याल था कि अपहरण में भी नंदू गोप का ही हाथ है- "पुलिस क्या करेगी? खुद मुख्यमंत्री का उसकी पीठ पर हाथ है। गोयल के बेटे का अपहरण हुआ, तो गोयल मुख्यमंत्री से मिला। गोयल मुख्यमंत्री के लिए हर तरह से हाज़िर रहता था और वह उनका प्रिय आदमी समझा जाता था। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि बच्चे को अपहर्ताओं के चंगुल से छुड़ाने के लिए वह कोई क़सर नहीं छोड़ेंगे लेकिन आठ साल का वह लड़का डेढ़ महीने तक लापता रहा, तो मुख्यमंत्री ने क्या कहा, जानते हैं? कहा- "गोयल, तुम्हारे लिए पांच लाख कोई बड़ी रकम नहीं है। अपने आदमी हो, इसलिए कहता हूँ ये पुलिस वाले साले सब निकम्मे हैं।

(क्रमश:)

* आजकल के सौजन्य से

महत्वपूर्ण तिथियाँ

राम-नवमी (३ अप्रैल), महावीर जयंती (७ अप्रैल), हनुमान जयंती (९ अप्रैल), गुड-फ़्राइडे (१० अप्रैल), ईस्टर (१२ अप्रैल), बैसाखी (१४ अप्रैल), मेल्बर्न का अंतर्राष्ट्रीय हास्य-प्रहसन सप्ताह (१-२६ अप्रैल), ऐन्ज़ाक-दिवस (२५ अप्रैल), अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस (१ मई), महात्मा बुद्ध का जन्म दिवस तथा विशाखा पूजा (९मई)।

सूचनाएँ

१. **महफ़िल-नाइट** (शुक्रवार, १७ अप्रैल व १५ मई)
स्थान - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल।
समय- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक।
सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश निशुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये, डा० शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

२.**राजस्थानी कुटुम्ब 'गणगौर' मेला** (रविवार, १९ अप्रैल)
समय - सुबह १०.३० बजे से दोपहर के ३.०० बजे तक।
स्थान - हॉथोर्न टाउन हॉल, ३६० बरखुड रोड, हॉथोर्न (मेलवे संदर्भ ४५ ए-१०)
प्रवेश शुल्क - ५ डालर प्रति व्यक्ति, बच्चे नि:शुल्क। टिकट, जो भारतीय दुकानों पर उपलब्ध हैं,
पहले से ख़रीदे जाने चाहिये।
विशेष आकर्षण - राजस्थानी विवाह का संगीत कार्यक्रम - 'बाई चली ससुरिया', दाल-बाटी-चूरमा,
गणगौर साँवरी, विभिन्न प्रकार के भोजन, विविध प्रकार के स्टॉल
अधिक जानकारी के लिये, विशाल मेहता से (०४०२) २२८ ६४१ पर सम्पर्क कीजिये।

३. **साहित्य-संध्या/ आपकी बात** (शनिवार,२ मई)
स्थानीय साहित्यकारों द्वारा सुनिये और सुनाइये - कविताएँ, कविता-पाठ, चुटकुले, गुदगुदी, कहानियाँ, मनोरंजक घटनाएँ।
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५ डी ६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
मुफ़्त चाय-पानी का प्रबन्ध है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये -
हरिहर झा (९५५५-४९२४), ई-मेल- hariharjha2007@gmail.com
सुभाष शर्मा (०४३३)१७८३७७,ई-मेल- subhash.sharma@ rmit.edu.au
नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२ ई-मेल- nalinksharda@gmail.com

अब हँसने की बारी है

१. भिखारी, रोटी और पत्नी

भिखारी (रमेश से) - बाबू जी, ग़रीब को खाने के लिये एक रोटी मिल जायेगी?

रमेश (भिखारी से) - अभी मेरी पत्नी घर पर नहीं है।

भिखारी (रमेश से) - मैंने रोटी माँगी है, आपकी पत्नी नहीं।

२. जज और चोर

जज (चोर से) - क्या तुम ने चोरी की थी?

चोर (जज से) - जी साहब।

जज (चोर से) - यह बताओ कि तुम ने चोरी कैसे की?

चोर (जज से) - रहने दीजिये साहब, अब इस उम्र में आप चोरी के गुण सीख कर क्या करेंगे।

३. विवाह और कष्टें

प्रेमिका (प्रेमी से) - जब हमारा विवाह हो जायेगा तो मैं तुम्हारी सारी चिंताएँ और कष्ट बाँट लूँगी।

प्रेमी (प्रेमिका से) - मुझे तुम से यही उम्मीद है, परन्तु मेरे जीवन में कोई चिंता या कष्ट नहीं है।

प्रेमिका (प्रेमी से) - वह तो इसलिये कि अभी हमारा विवाह नहीं हुआ है।